संपादकीय

महत्वपूर्ण एवं खास

ट्रूडो का दौरा

सात दिवसीय भारत दौरे पर आए कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने जिस सादगी से साबरमती आश्रम से लेकर स्वर्णमंदिर तक की यात्रा की, वह देश के लिए अलग तरह की बात थी। सादगी भरी यह सुंदरता कम राजनेताओं में देखने को मिलती है। इस बीच कनाडाई मीडिया ने उनकी जमकर खिंचाई की। कहा कि भारत में एक जूनियर मिनिस्टर उन्हें रिसीव करने आया। यह भी कि वह इधर-उधर घूमते फिर रहे हैं, कोई उन्हें पूछ भी नहीं रहा। बहरहाल, ये सारे कटाक्ष दौरे के छठें दिन खारिज हो गए, जब जस्टिन ट्रूडो दिल्ली पहुंचे और राष्ट्रपति भवन में उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। ट्रूडो की बेटी एला-ग्रेस ने राष्ट्रपति भवन में जैसे ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देखा, दौड़कर उनके गले लग गई। दरअसल, दोनों में अच्छी जान पहचान है। इस मुलाकात के पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्विटर से सन 2015 के कनाडा दौरे की वह तस्वीर ट्वीट की थी, जिसमें वह एला के साथ खेल रहे थे। दौरे के आखिरी चरण में दोनों देशों के बीच छह क्षेत्रों में समझौते हुए जिसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, पेट्रोलियम, स्पोर्ट्स, कॉमर्स एंड इंडस्ट्रियल पॉलिसी और उच्च शिक्षा के अलावा साइंस, टेक्नॉलजी व इनोवेशन शामिल हैं। भारत कनाडा का आठवें नंबर का आयातक है और दोनों देशों के बीच पिछले साल 8.4 अरब डॉलर का व्यापार हुआ है। अभी चार सौ से अधिक कनाडाई कंपनियां भारत में काम भी कर रही हैं। आपसी कारोबार का दायरा बढ़ाने को लेकर दोनों देश उत्सुक हैं और इस दौरे के बाद शायद इसमें तेजी देखने को मिले। बहरहाल, प्रधानमंत्री ट्रूडो के दौरे की एकमात्र दुखती रग रहा आतंकवाद, जो दोनों देशों की समस्या है और जिस पर कड़ाई से रोक लगाने को लेकर दोनों ही प्रतिबद्ध हैं। वजह जो भी रही हो, पर इस दौरे में एक बड़ी चूक दर्ज की गई। सन 1986 में पंजाब सरकार के मंत्री मलकीत सिंह सिद्धू पर जानलेवा हमला करने वाले आतंकवादी जसपाल अटवाल को दिल्ली स्थित कनाडाई उच्चायोग में भोज के लिए आमंत्रित करना पुराने घावों को कुरेद गया। यह दर्द इसलिए भी ज्यादा हुआ, क्योंकि ट्रूडो अपने देश में सिख आतंकवाद को लेकर अपने नरम लहजे के लिए जाने जाते रहे हैं।

कोटा ही तो सब कुछ है

एक ज़माने में मां-बाप को जो खुशी अपने बच्चों को कैंब्रिज भेज कर मिलती थी, उससे कहीं ज्यादा खुशी आजकल कोटा भेजकर मिलती है। राजस्थान का छोटा-सा शहर कोटा देश में प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता दिलाने का मोटा-सा केंद्र हो गया है। यहां की गली-गली में प्रतियोगी परीक्षाओं के 'सफलता गारंटी प्रशिक्षण केंद्र' ऐसे छाए हुए हैं कि ये शहर से ज्यादा एक सुपर मार्किट लगता है। हर साल देशभर से हज़ारों मां-बाप अपने बच्चों के साथ अपनी महत्वाकांक्षाओं के बड़े-बड़े सूटकेस उठाए कोटा पहुंच जाते हैं। सच तो यह है कि बच्चे के आठवीं-नवमी कक्षा में पहुंचते ही हर अति महत्वाकांक्षी मां-बाप के दिमाग के मोबाइल का जीपीएस कोटा जाने का रास्ता दिखाने लगता है। उनका बैंक एकाउंट रूपी ट्यूबवैल खुद को खाली करके कोटा के किसी प्रशिक्षण केंद्र के खेत को सींचने को मचलने लगता है। ऐसे ज्यादातर मां-बाप यह मानते हैं कि बच्चों को उच्च सरकारी नौकरियां या तो आरक्षण वाला कोटा दिला सकता है या फिर प्रशिक्षण वाला कोटा। अब जिसके पास आरक्षण नहीं, उसके लिए कोटा की शरण है। इस शहर के प्रशिक्षण केंद्र अपने बच्चों के भविष्य को लेकर आशंकित माता-पिताओं के धड़कते दिलों की सफल बाईपास सर्जरी करने में मास्टर हो गए हैं। वे बच्चे के मां-बाप को आश्वस्त करते हैं कि आप बिल्कुल सही जगह पर आये हैं, हम आपके बच्चे को सफलता पाने का ऐसा टॉप क्लास यंत्र बनाएंगे जैसे कोई सुनार हॉलमार्क गहने बनाता है।

रचनाकारों को जोखिम तो उठाना होगा

जीवन के 83 वसन्त देख चुके मस्तमौला, घुमक्कड़ व फक्कड़ आबिद सुरती को आमतौर पर उनके चित्रों, और उनमें भी खासतौर पर 'धर्मयुग' की अपने समय की अत्यन्त लोकप्रिय ढब्बूजी श्रृंखला के व्यंग्यचित्रों, के लिए जाना जाता है। हालांकि उनका सृजन बहुआयामी है और उसमें व्यंग्य की 'काली किताब' के अलावा 'टूटे हुए फरिश्ते', 'आधी स्त्री', 'आकाश के उस पार', 'आदमखोर' और 'काले गुलाब' जैसे कई उपन्यास तो कई सौ कहानियां भी शामिल हैं। हां, वे फिल्मों के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे हैं और विभिन्न कलाविधाएं उनके निकट जिन्दगी के बंधे-बंधाए ढर्रे को तोड़ने, बेहतर बनाने, सच्चाइयों से रूबरू होने, जड़ताओं व रूढ़ियों पर प्रहार करने व उनके खिलाफ आन्दोलन व उद्वेलन पैदा करने का माध्यम हैं तो रचनाकर्म का सबसे बड़ा धर्म मनुष्य की संवेदनशीलता को बचाना। मानव जीवन की समस्याओं के प्रति बेहद संवेदनशील इस सर्जक ने ग्यारह साल पहले 2007 में अकेले दम पर 'सेव वाटर, सेव इण्डिया, सेव अर्थ' नाम से पेयजल की बरबादी रोकने का अभियान शुरू किया तो उसके प्रति अनूठे समर्पण के कारण कई लोग उसे 'वनमैन एनजीओ' कहने लगे। आपने तमाम विधाओं में सृजन किया लेकिन 'धर्मयुग' के कार्टून कोनों से निकलकर ढब्बूजी आपकी शख्सियत से ऐसे जुड़े कि अस्सी पार के आबिद सुरती पर भी महज कार्टूनिस्ट का ही लेबल चिपका नजर आता है? हां, हमारी दुनिया में लेबल कुछ ऐसे ही चस्पां किये जाते हैं। छवियां भी इसी तरह बनाई और बिगाड़ी जाती हैं। समझा ही नहीं जाता कि जब फिल्मों तक के एक सेकेण्ड में दो दर्जन फ्रेम होते हैं तो मानव जीवन को किसी एक फ्रेम में कैसे बांधा जा सकता है? महात्मा गांधी तक के साथ हमने ऐसा ही नासमझ बरताव किया। उनकी ऐसी छवि गढ़ दी कि कोई उनका नाम ले भर ले तो एक पोपले मुंह वाला दुबला-पतला बूढ़ा-सा शख्स आंखों के आगे नांचने लगता है। कभी लाठी टेकता तो कभी नोटों में छिपकर बैठा। जैसे कि बापू का कोई और रूप रहा ही न हो। न वे कभी बच्चे रहे हों, न ही वकील वगैरह। लेकिन मैं कहता हूं कि इसका प्रतिरोध करने का बस एक ही तरीका है और वह यह कि अपना फर्ज बखूबी निभाया जाए। आप 'सेव वाटर, सेव इण्डिया, सेव अर्थ' को अपना उद्देश्य बनाये हुए हैं? ठीक कहते हैं। 2007 में अंतर्राष्ट्रीय जलवर्ष मनाया जा रहा था तो मैंने एक अखबार में पढ़ा कि अगर किसी नल की टोंटी से हर सेकेंड एक बूंद पानी टपके तो एक महीने में एक हजार लीटर पानी बेकार बह जाता है। मुझे लगा कि एक ऐसे देश में, जिसमें करोड़ों लोगों को अभी भी पीने का शुद्ध पानी मयस्सर नहीं होता, इस बरबादी को रोकना उन्हें पानी उपलब्ध कराने के बराबर है। बस, मैंने इसमें अपनी भूमिका तलाशी और काम शुरू कर दिया। मैं एक प्लम्बर के साथ हर रविवार को सबेरे से दोपहर तक मुम्बई के विभिन्न इलाकों में जाकर लोगों के खराब नल ठीक कराने और उनसे पानी का बेकार बहना रोकने लगा। समस्या कोई भी हो, उसका हल तब होता है, जब उससे पीड़ित लोग भी उसके समाधान का हिस्सा बनें। अब तो आपके इस अभियान से और भी लोग जुड़े होंगे। इस बाबत अपने अनुभवों को कैसे बांटेंगे? जहां तक मेरे अभियान से लोगों के जुड़ाव की बात है, काफी समय तक मैंने इसे बिना किसी प्रचार के अकेले चलाया। लेकिन बाद में एक दिन हुआ यह कि एक अखबार में इस अभियान को लेकर आधे पेज का राइटअप छप गया तो मुझे फिल्म अभिनेता शाहरुख खान का एस.एम.एस. आया कि अगर उनके वालिद जिन्दा होते तो वे भी ऐसा ही कुछ कर रहे होते। इसके बाद तो छोटा-मोटा कारवां ही बन गया। इस कारवां के साथ चलते हुए भी आपने बच्चों के लिए 'नवाब रंगीले' जैसी जानकारीवर्धक पुस्तक रची। और भी बहुत कुछ रचा? हां, इसमें मुझे नेशनल बुक ट्रस्ट का बहुत सहयोग मिला। मैंने इसे देश के बच्चों को देश की संस्कृति, सभ्यता और वर्तमान के बारे में ठोस सच्चाई की जमीन पर खड़ा करने के प्रयासों के क्रम में लिखी। इस तथ्य से दुखी होकर कि उन्हें इस बाबत जो चीजें बताई जाती हैं, उनसे वे रियलिटी और फैन्टेसी के बीच फंस जाते हैं। उन्हें बताया जाता है कि भारत कभी बहुत महान देश था, जो यकीनन रहा होगा, मगर अब वह महानता उन्हें कहीं दिखती नहीं तो उन्हें सिक्के का दूसरा पहलू समझ में नहीं आता। आप संदेश या उपदेश देने में विश्वास नहीं रखते। वजह? आखिर कौन-सा संदेश या उपदेश दिये जाने से बचा है? संदेशों या उपदेशों से देश दुनिया या कि मानव समाजों का कितना भला हुआ है? फिर बेवजह उन्हें ही दोहराते रहने से कहीं बेहतर रास्ता यह है कि सच्चाई की बात की जाए।

श्रीदेवी : चपल आंखों से रचा इतिहास

सफलता और लोकप्रियता का कोई एक शिखर नहीं होता है. उसकी ऊंचाई समय के अनुसार बढ़ती-घटती रहती है. यह इतना लचीला होता है कि हर कोई अपनी क्षमता और प्रतिभा के हिसाब से उसे लंबा-चौड़ा कर सकता है. बात अगर श्रीदेवी की हो तो कहना पड़ेगा कि वह अकेली ऐसी नायिका साबित हुई, जिनके अपने दम पर फिल्में चलती थी. यह सिलसिला 'सदमा' से लेकर 'इंग्लिश विंग्लिश' और 'मॉम' तक देखने को मिला. यह भी सच है कि चमक-दमक और ग्लैमर भरी दुनिया में सफलता को नापने का निश्चित पैमाना नहीं होता है. खासकर, जब हीरोइन की बात हो तो उसे पहली ही नजर में शो-पीस की तरह देखा जाता है. अगर उसने उस सीमा को पार करने का साहस कर लिया तो उसकी तुलना नायकों से करने का सिलसिला शुरू कर दिया जाता है. कभी यह चुनौती मधुबाला, मीना कुमारी और नरगिस को भी मिली थी जब उनके सामने दिलीप कुमार, राज कपूर और देव आनंद जैसे शिखर पुरुष बैठे थे. वही चुनौती बाद में श्रीदेवी को भी मिली लेकिन उन्होंने साबित किया कि पुरुष-प्रधान इंडस्ट्री में उनकी अपनी भी औकात है. जब कुछ लोगों को यह नहीं पचा तब श्रीदेवी के आभामंडल को सीमित करने के लिए उन्हें 'लेडी अमिताभ बच्चन' कहा जाने लगा. हर हीरोइन की तरह श्रीदेवी की निजी जिंदगी के बारे में बहुत सारे चाहे-अनचाहे किस्से-कहानियां रचे गए. लेकिन यह भी सच है कि अस्सी के दशक के अंत में हिन्दी सिनेमा में जब बदलाव की नई इबारत लिखी जाने लगी तो उनकी फिल्म 'चांदनी' ने उसमें अहम भूमिका निभाई. सत्तर के दशक में आतंक, हिंसा, हत्या, बलात्कार वाली फिल्मों का जो दौर शुरू हुआ, वह अस्सी के दशक पर भी काबिज होता गया. लेकिन इसी बीच 'कयामत से कयामत तक', 'चांदनी' जैसी एक-दो फिल्में भी बनी, जिसने अपनी सफलता से बता दिया कि नकलीपन ज्यादा दिनों तक टिका नहीं रह सकता है. इंडस्ट्री को प्रेम-कहानियों को इमोशनल अंदाज में पेश करना ही होगा. रोमांटिक फिल्मों के शहंशाह और कोमल स्पर्श से रोमांचित कर देने वाले निर्माता-निर्देशक यश चोपड़ा ने तब श्रीदेवी को लेकर 'चांदनी' बनाई. एक साफ-सुथरी फिल्म ने उस माहौल को पलटकर रख दिया.

ग्रे लिस्ट में पाकिस्तान

पैरिस में शुक्रवार को फाइनैंशल ऐक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) की मीटिंग हुई जिसमें पाकिस्तान को फिर से एण्ड आईएसक्यूयूओ;ग्रे लिस्ट एण्ड आरएसक्यूयूओ; वाले देशों में शामिल करने का फैसला लिया गया। इसका औपचारिक ऐलान अभी बाकी है। एफएटीएफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टेरर फंडिंग और मनी लॉन्ड्रिंग पर नजर रखने वाली संस्था है। इसके पहले 2012 से 2015 तक पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट में रखा गया था। इस फैसले से दुनिया में एक बड़ा संदेश भी गया है कि कुछेक राष्ट्रों में कूटनीतिक दृष्टिकोण से ज्यादातर मुद्दों पर सहमति न हो तब भी आतंकवाद के खिलाफ वे एक साथ आ सकते हैं। एफएटीएफ के 39 सदस्य देशों में से तुर्की को छोड़कर बाकी सभी ने अमेरिका की ओर से पाकिस्तान के खिलाफ पेश किए गए प्रस्ताव का समर्थन किया। इसमें अर्से बाद चीन द्वारा आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान का साथ छोड़ना भारत के लिए उम्मीद बंधाने वाली बात है। बहरहाल, इस आधार पर ज्यादा खुशफहमी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट में शामिल करने के प्रस्ताव को समर्थन देने के अलावा चीन के पास कोई चारा भी नहीं था। चीन खुद भी अपने शिनच्यांग प्रांत में आतंकवाद का भुक्तभोगी है। अभी वह इस मुद्दे पर विश्व बिरादरी से अलग खड़ा होता है तो कल किसी भयानक घटना के समय उसका साथ देने कोई आगे नहीं आएगा। वैसे, पाकिस्तान को अपना भाई मानने के रवैये पर चीन आज भी कायम है और इसकी वजह सिर्फ चीन-पाक आर्थिक गलियारे का निवेश और एण्ड आई एस क्यूयूओ; वन बेल्ट वन रोड एण्ड आरएसक्यूयूओ; की उसकी वृहद योजना नहीं है। एण्ड आईएसक्यूयूओ;ग्रे लिस्ट एण्ड आरएसक्यूयूओ; देशों में शामिल होने के बाद पाकिस्तान से होने वाली हर अंतरराष्ट्रीय वित्तीय लेन-देन पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था और बिगड़ सकती है। दुनिया भर की बड़ी कंपनियां पाकिस्तान में निवेश करने से बचेंगी। आईएमएफ और वर्ल्ड बैंक भी उसे लोन देने से बचना चाहेंगे। पाकिस्तान के कारोबारियों पर भी इसका असर पड़ेगा और वे अपने राजनेताओं पर रवैया बदलने के लिए दबाव डाल सकते हैं। पिछले महीने ही अमेरिका ने उसे दी जाने वाली करोड़ों डॉलर की सैन्य सहायता रोक दी।

धरती में रिसता जहर

प्लास्टिक के विकल्प ने यों तो हमारी जिंदगी को आसान किया है. पॉलीथिन की थैलियां और प्लास्टिक की चीजें (रंगबिरंगे पेन-पेंसिल से लेकर डिजाइनर लंच बॉक्स और पानी की बोतलें) हमारे जीवन में अनायास नहीं आई.उन्हें साइंस की तरक्की और उनसे मिलने वाली सुविधा ने जीवन में शामिल कराया है. अमेरिकी साइंटिस्टों का आकलन है कि पिछले 65 सालों में पूरी दुनिया में 8.3 अरब टन प्लास्टिक का निर्माण हुआ है. निश्चय ही प्लास्टिक ने काफी सुविधाएं दीं, लेकिन समस्या यह है कि इसका 70 फीसद हिस्सा अब कबाड़ (प्रदूषित-जहरीले कचरे) के रूप में धरती पर मौजूद है.प्लास्टिक का सबसे खराब पहलू यह है कि इसका उपयोगी जीवन छोटा है और कूड़े के रूप में इसकी जिंदगी काफी लंबी है. प्लास्टिक की कोई थैली हो सकता है कि एक दिन से लेकर साल भर तक इस्तेमाल में आए, लेकिन फेंकने पर उसे पर्यावरण में नष्ट होकर घुलने में कई सौ या हजार साल भी लग सकते हैं. ऐसे में यहां-वहां कबाड़ में फेंक दी गई पॉलिथिन की थैलियां और प्लास्टिक के लंच बॉक्स, बोतलों से लेकर तमाम सामान या तो भोजन समझ लिये जाने पर गायों आदि जानवरों के पेट पहुंचते हैं या कबाड़ के रूप में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं.हाल में पटना में बिहार वेटनेरी कॉलेज में एक गाय के पेट से 80 किलोग्राम प्लास्टिक कचरा निकाला गया.

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. चौड़ी और सपाट जमीन, रणभूमि 3. स्वरग्राम, संगीत के सात स्वरों का समूह 6. धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण, धूल 7. हिम्मत, सामर्थ्य 8. अभ्यर्थना, रिसेप्शन, यथा अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल 9. आपस का करार, निबटारा 10. वरदान, दुल्हा 12. भोग, ऐश्वर्य 13. कीमत, मूल्य 14. एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं 16. समता, बराबरी 18. अश्लील, बेहुदा, अभद्र, घटिया 19. युक्ति, उपाय, ढंग 20. रिक्त, अपूर्ण।

ऊपर से नीचे

1. दोस्ती, मित्रता 2. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 4. बचाव, हिफाजत 5. मीठापन, मधुर होने का भाव 7. समुद्र 8. आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो 9. रसवाला, रसदार 11. मां का बच्चों के प्रति प्रेम 13. खैरात, देने की क्रिया 15. दृष्टि, निगाह 16. वरिष्ठ, बुजुर्ग, चतुर 17. पराजय, हार।

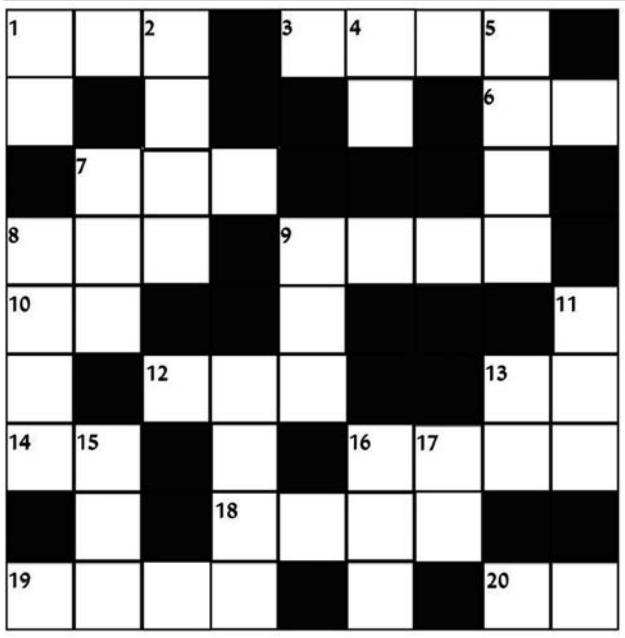

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 34 का हल

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व	
प		ति			र	क्ष	क	
र	ह	मा	न					आ
वा			मि	थु	न		दा	स
ह	वा	ला	त		सी	ता		पा
	न				ब	क	वा	स
औ	र	त		म		त		
ला		बे	च	ना		व	च	न
द	ह	ला		ना	ग	र		दी

सू-दोकू

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.34 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

राशिफल

मेष- किसी अधिकारी से वाद-विवाद होने पर कानूनी पक्ष नया मोड़ ले सकता है।

वृष- आज जमीन-जायदाद से संबंधित विवाद में हानि हो सकती है। भौतिक सुख के साधनों की वृद्धि होगी।

मिथुन- आज नए व्यापार के लिए नई योजनाएं बनेंगी। ऋण भार में कमी होगी। संतान पक्ष का पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क- नयी प्रॉपर्टी खरीदने की सम्भावना है। आर्थिक समृद्धि तभी संभव है जब आप जीवन में थोड़ा धैर्य और सूझ बूझ से निवेश करें।

सिंह- आज पुराने मित्रों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। बुद्धि विवेक से लिए गए निर्णय लाभप्रद रहेंगे।

कन्या- आपके खर्चे कम हो जाने से आपकी अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। अच्छे वाहन का सुख प्राप्त होगा।

तुला- धन प्राप्ति से कोष वृद्धि होगी। नौकरी वाले जातकों के अधिकारों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक- नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन और सफलता मिलने की उम्मीद है। आपकी पूंजी में भी बढ़ोतरी होगी, लेकिन शुरुआती निवेश में आपको कुछ सावधान रहने की आवश्यकता है।

धनु- आर्थिक मसलों में सोच समझ कर किए गए निवेश अत्यधिक फायदा दे सकते हैं।

मकर- कार्यक्षेत्र में आज जबरदस्त उछाल आपको दिखाई पड़ेगा।

कुंभ- आपके पुराने रूके हुए कार्य कुछ झंझटों व खर्चा करने के बाद पूर्ण हो जाएंगे।

मीन- व्यापार की दृष्टि से आज का दिन अनुकूल रहेगा। कानूनी विवाद में सफलता, स्थान परिवर्तन की योजना सफल हो सकती है।